भिलाई इस्पात से बनी रेल की पटरियां

7139. **श्री हुकम चन्द कछवाय :**
श्री जगन्नाथ राव जोशी :

क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि गुणा-मक्सी रेलवे लाइन के, जिस पर निर्माण कार्य चल रहा है दसवें और सोलहवें किलोमीटर के बीच कहीं 42-42 फुट लम्बी भिलाई इस्पात से बनी 200 रेल पटरियां गत वर्ष से मिट्टी के नीचे दबी पड़ी हैं और जंग से बेकार होती जा रही हैं ;

(ख) यदि हां, तो इस के क्या कारण हैं ; और

(ग) सरकार ने इस संबंध में क्या कार्यवाही की है ?

रेलवे मंत्री (श्री वे० मु० पुनाचा) : (क) और (ख). इस लाइन पर रेल की कुछ नयी पटरियां निर्माण स्थल पर कि० मी० 10 के पास तथा कि०मी० 15 और कि० मी० 16 के बीच पड़ी हैं। परन्तु न तो वे दबी पड़ी हैं और न इन में जंग लगा है, बल्कि वे अच्छी तरह चट्टों मे रखी गयी हैं और अच्छी हालत में हैं।

(ग) सवाल नहीं उठता।

मालगाड़ी तथा मिलिटरी ट्रक के बीच टक्कर

7140. **श्री हुकम चन्द कछवाय :**
श्री राम सिंह अयरवाल :

क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि चंडीगढ़ से पांच मील दूर एक क्रासिंग पर एक मालगाड़ी तथा मिलीटरी ट्रक के बीच टक्कर हो जाने के परिणामस्वरूप दो व्यक्ति मारे गये थे और तीन व्यक्ति जख्मी हो गये थे जैसा कि दिनांक 21 अप्रैल, 1967 के "नव भारत टाइम्स" में समाचार प्रकाशित हुआ था ;

(ख) यदि हां, तो इस दुर्घटना के क्या कारण थे ; और

(ग) इस के परिणामस्वरूप जान और माल का कितना नुक्सान हुआ ?

रेलवे मंत्री (श्री वे० मु० पुनाचा) : (क) और (ग). यह दुर्घटना 19-4-67 को हुई। इस दुर्घटना मे दो व्यक्ति मरे और चार घायल हुए। घायलों में से गाड़ी के फायरमैन सहित दो व्यक्तियों को गंभीर चोटें आयीं। रेल-सम्पत्ति को लगभग 19,450 रुपये की क्षति पहुंचने का अनुमान है।

(ख) दुर्घटना सैनिक ट्रक के ड्राइवर की लापरवाही के कारण हुई जिसने 'चेतावनी पट्ट; की ओर ध्यान नहीं दिया और उस समय रेल पथ को पार करने की कोशिश की जब गाड़ी पास आ रही थी।

मक्सी और शाजापुर के बीच रेलवे लाइन पर पुल

7141. **श्री हुकम चन्द कछवाय :**
श्री राम सिंह अयरवाल :

क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि मकसी और शाजापुर के बीच में 4 और 5 किलोमीटर के बीच रेलवे लाइन बिछाने से पहले पुल नहीं बनाया गया था और वर्ष 1966 में इस पुल के बनाने में 90 हजार रुपये की अतिरिक्त राशि खर्च की गई थी;

(ख) क्या यह भी सच है कि 14 और 15 किलोमीटरों के बीच कैन्टोनमेन्ट स्टेशन पर रेलवे फाटक संख्या 6 पर बरसाती पानी की निकासी के लिये पश्चिम की ओर नाली की व्यवस्था नहीं की गई है जिसके कारण वर्षों से मिट्टी के बहने की सम्भावना है; और

(ग) यदि हां, तो इस सम्बन्ध में सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

रेलवे मंत्री (श्री चे० मु० पुनाचा) : (क) चूंकि निर्धारित जलमार्ग नहीं था इसलिए मक्सी–शाजापुर खण्ड पर किलोमीटर 4 और 5 के बीच शुरू में कोई पुल नहीं बनाया गया था । मिट्टी का काम पूरा हो जाने के बाद ही पुल की जरूरत का पता चला । इसलिए इस क्षेत्र में रुके हुए पानी को निकालने के लिए 1–15 फुट स्पैन की प्रतिबलित सीमेंट-कांक्रीट की सिल्ली वाली एक पुलिया बाद में बनायी गयी । पुल की अनुमानित लागत लगभग 30,000 रुपये थी न कि 90,000 रुपये ।

(ख) छावनी स्टेशन (कैंट स्टेशन नहीं) के समीप समपार सं० 6 के पहुंच मार्ग पर 1–12 फुट प्रतिबलित सीमेंट–कांक्रीट की सिल्ली वाली एक पुलिया बनाकर आवश्यक आर-पार नाली की पहले ही व्यवस्था कर दी गयी है । इसलिए वर्षा के कारण पुश्ते के किसी भाग के बह जाने की कोई संभावना नहीं है ।

(ग) प्रश्न नहीं उठता ।

मोर के पंखों का निर्यात

7142. **श्री ओंकार सिंह :**
श्री हुकम चन्द कछवाय :

क्या **वाणिज्य** मंत्री 31 मार्च, 1967 के अतारांकित प्रश्न संख्या 335 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या केन्द्रीय सरकार को पता है कि मोर के पंखों को, जिन से काफी विदेशी मुद्रा प्राप्त की जा सकती है, एकत्र करने के लिये राज्य सरकारों ने कोई व्यवस्था नहीं की है;

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार का विचार राज्य सरकारों को इस बारे में हिदायतें जारी करने का है ताकि उनका निर्यात पर्याप्त मात्रा में बढ़ाया जा सके; और

(ग) क्या सरकार का विचार पंख एकत्र करने वालों से भी निर्यात के लिये पंख खरीदने की कोई व्यवस्था करने का है ?

वाणिज्य मंत्री (श्री दिनेश सिंह) : (क) से (ग). मोर के पंख निजी व्यापारियों द्वारा एकत्र और निर्यात किये जा रहे हैं । राज्य सरकारों से निर्यात बढ़ाने के लिये अनुरोध करने का सरकार का कोई विचार नहीं है और पंख एकत्र करने वालों से मोर के पंख खरीदने की भी सरकार का विचार नहीं है ।

अवांछित तरीकों से पंख एकत्र करने को रोकने के लिये सीमित वार्षिक कोटे के अंदर अंदर निर्यात की अनुमति दी जाती है ।

Exports to Neighbouring Countries

7143. Shri Ram Krishan Gupta: Will the Minister of **Commerce** be pleased to state the steps taken to sustain exports to neighbouring countries like Ceylon, Burma and Nepal with a view to evolve effective measures to meet the Chinese challenge in these natural markets for the Indian exports?

The Minister of Commerce (Shri Dinesh Singh): A number of measures have been taken by the Government of India to expand and diversifying our exports to the neighbouring countries. Trade Agreements/Arrangements have been concluded with Afghanistan, Ceylon, Indonesia, Iran, Japan, and Nepal. We are also negotiating Trade Agreements with the Governments of Burma, Malayasia and Thailand. With a view to assist the friendly countries in purchasing their essential requirements in India, loans and credits have been granted to countries like Ceylon, Indonesia and Nepal. Deferred-payment facilities are also being granted on merits to facilitate export of items like capital goods and engineering items. Our Trade Representatives in these countries keep a close watch on the economic trends, and they advise the concerned Export Promotion